घरों का निर्माण साथ में यादें

सुमेधा रायकर-म्हात्रे और क्रिस्टीन डैल बेलो

वे कंधे से कंधा मिलाकर एक मुहिम को कामयाब बनाने में जुटे हुए थे। अमेरिका के एक पूर्व राष्ट्रपति, हॉलीवुड और बॉलीवुड के कई कलाकार तथा अमेरिकी नौसेना के दर्जनों जवान इन लगभग दो हजार स्वयंसेवकों में शामिल थे। ये महाराष्ट्र के ग्रामीणों के लिए सस्ते और टिकाऊ मकान बनाने की इस पांच दिवसीय मुहिम में शिरकत कर रहे थे। यह मुहिम इसी साल अक्टूबर में शुरु की गई।

अमेरिकी नौसेना के ये जवान खास दौरे पर मुंबई आए थे। अमेरिका के विभिन्न पोतों पर तैनात रहने वाले ये जवान 'बॉक्सर एक्सपीडिशनरी स्ट्राइक ग्रुप' के सदस्य थे और वार्षिक जिमी कार्टर परियोजना में हिस्सा लेने के लिए मुंबई से 110 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में लोनावाला के निकट मलावली गांव पहुंचे थे। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर और उनकी पत्नी रोजलीन दुनिया के विभिन्न भागों में सस्ते और टिकाऊ मकान बनाने तथा इस मकसद से चेतना जगाने के लिए हर साल एक हफ्ते का समय निकालते हैं। इस दौरान वे भवन निर्माण के अपने कौशल का भी उपयोग करते हैं। यह पहला मौका था, जब नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कार्टर अपने 23 साल पुराने भवन निर्माण मिशन को भारत लाए। मालावी का मामला *हैबिटेट फॉर ह्युमेनिटी* नाम की एक अमेरिका स्थित धर्मार्थ संस्था के प्रयासों का एक नमूना भर था। यह संस्था भारत में वर्ष 2010 तक ढाई लाख गरीब लोगों के लिए एक अदद घर बनाने के मकसद से स्वयंसेवक और निर्माण सामग्री उपलब्ध करा रही है।

कार्टर और उनकी पत्नी के साथ हॉलीवुड के मशहूर कलाकार ब्रैड पिट, बॉलीवुड के एक्टर जॉन अब्राहम, मुंबई में अमेरिका के कांसुल जनरल माइकल ऑवन की पत्नी एनरीक ऑवन और अन्य कई स्वयंसेवक ग्रामीणों के लिए 33 वर्ग मीटर के डुपलेक्स मकान बनाने की मुहिम में साथ थे। इन मकानों के भावी स्वामियों ने भी इस मुहिम में हाथ बंटाया। इन्हें ये मकान खरीदने के लिए ब्याज मुक्त ऋण देने की व्यवस्था की गई है। *हैबिटेट* और उसके सहयोगियों को ऐसे हर मकान की लागत फिलहाल 2840 डॉलर पड़ रही है। मकान का निर्माण पूरा होने पर आवंटी परिवार को आठ साल के अंदर ऋण चुकाना होगा और इस दौरान मकान को *हैबिटेट* के ही पास रेहन (मॉर्टगेज) रखा जाएगा। आवंटियों द्वारा किए जाने वाले भुगतान से अन्य लोगों के लिए मकान बनाए जाएंगे।

पूर्व राष्ट्रपति कार्टर का अमेरिकी नौसेना से पुराना रिश्ता है। वे अमेरिकी नौसेना अकादेमी के ग्रेजुएट हैं और उन्होंने एक नौसेना अधिकारी के रूप में सात साल तक कार्य किया। उन्होंने नौसैनिकों को खासतौर से अपनी इस सामुदायिक सेवा परियोजनाओं से जोड़ा है। अमेरिकी नौसेना अपने सहयोगियों के साथ एक अर्से से सामुदायिक सेवा के कार्यों को अंजाम दे रही है, लेकिन यह काम एक अलग ही किस्म का था। ऑफिसर डुआन सोलोमन कहते हैं, 'जब मैंने इसके लिए सहमति दी थी तो मुझे अंदाजा भी नहीं था कि यह काम इतने बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। हमने सोचा था कि हमें एकाध मकान बनाना होगा, पर यहां तो हम एक पूरे समुदाय की रचना कर रहे हैं।'

नौसैनिकों के लिए इस अवसर का एक और महत्व था। इस दौरान उनको कई अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवकों से मिलने और उनके साथ काम करने का मौका मिला। नौसेना के एक कुक मैरिबेल चालबर्ग कहते हैं, 'मेरी टीम में कोरियाई, कंबोडियाई, भारतीय और हांगकांग के लोग शामिल हैं। हम एक साझा मकसद के लिए एक साथ काम करके कुछ नया रच रहे हैं। मैं एक गर्व और संतोष के साथ अपने देश लौटूंगा।'

इस मुहिम में हिस्सा लेने आए कई लोगों को इस बात का मलाल था कि वे ज्यादा दिनों के लिए यहां नहीं रुक सकते। ऑफिसर एडरिएल इवान्स कहते हैं, ''हम बहुत जल्दी वापस जा रहे हैं। मैं आराम करने या घूमने के बजाय यहां काम करना ज्यादा पसंद करूंगा।'' इवान्स असल में इस बात का जिक्र कर रहे थे कि नौसैनिकों को जहाज के बंदरगाह पर लगने के बाद आसपास घूमने और आराम करने की मंजूरी दी गई थी।

एक्टर ब्रैड पिट अपनी फिल्म 'ए माइटी हार्ट' की शूटिंग के सिलसिले में भारत आए हुए थे। उन्होंने मलावली में अजीज और शादिया शेख के घर चिनाई के काम में दिल से मदद की। अगले दिन वह सुभाष और शालिनी साठे के मकान के काम में मदद करने के लिए लौटे। उन्होंने छत की बीम रखने में स्वयंसेवकों की सहायता की। भारत की कुछ मशहूर हस्तियों और स्थानीय लोगों ने भी पूरे काम में बढ़-चढ़कर हाथ बंटाया। जॉन अब्राहम ने मांडा ज्ञानेश्वर जाधव के घर की छत बनाने में मदद की। हिस्ट्री चैनल की एंकर डायना हेडन और टॉक शो की मेजबान पूजा बेदी ने भी खासी दिलचस्पी लेकर काम किया।

भारत की इस यात्रा ने कार्टर को अपने कई मित्रों और अपनी मां लिलियन कार्टर के बहुत से सहयोगियों से मिलने का मौका भी मुहैया कराया। उनकी मां ने 1966-67 के दौरान मुंबई के एक उपनगर विखरोली की गोदरेज कॉलोनी में शांति वाहिनी के स्वयंसेवक के रूप में काम किया था। उन दिनों को याद करते हुए कार्टर कहते हैं, 'मेरी मां ने भाषाई दिक्कतों के बावजूद इस औद्योगिक परिसर में जिंदगी भर के लिए कई मित्र बनाए। यहां रहकर उन्होंने भारत और यहां की संस्कृति के बारे में बहुत कुछ सीखा। यही वजह है कि उनके ये मित्र और सहयोगी मेरे लिए खास मायने रखते हैं।'

लिलियन कार्टर जब भारत में थीं तो उन्होंने जिमी कार्टर को कई पत्र लिखे थे। इन पत्रों को बाद में संग्रहीत करके एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक का शीर्षक है- *एवे फ्रॉम होम: लेटर्स टु माइ फैमिली*। इन पत्रों के जरिए कार्टर को पता चलता रहता था कि गोदरेज कॉलोनी के क्लीनिक और

बाएं: अमेरिकी आर्मी रिजर्व के सार्जेंट पैट्रिक फिन्नर्टी ने भारत में घरों के निर्माण में मदद के लिए पेंसिल्वैनिया में अपनी विश्वविद्यालय की पढ़ाई से कुछ वक्त निकाला। उनके साथ काम कर रहे हैं अमेरिका में शिक्षा पाए बेदर इस्लाम, जो बांग्लादेश में जन्मे और अब भारत में डो केमिकल में काम कर रहे हैं।

नीचे: यूएसएस बॉक्सर पर सेवाररत कैलिफोर्निया के नाविक वनेसा मलाग्रा भारत के स्वयंसेवी राहुल यादन के साथ घर बनाने के लिए ब्लॉक रखते हुए।

ग्रेग पचकोवस्की, हैबिटेट फॉर ह्यूमैनिटी इंटरनेशनल

केवन भावसार/ यूडिया कॉन्सेप्ट

राजेश मिश्रा/ © पी.-एक्स्प्रेस.पी.

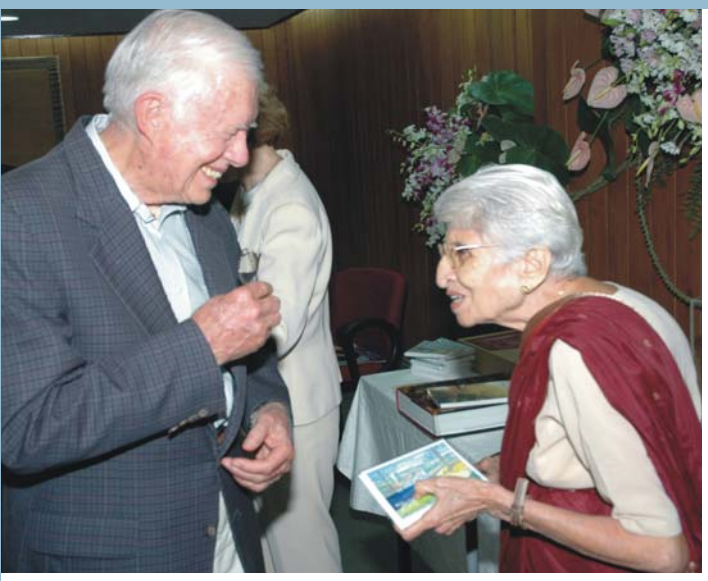

केनन भावसार स्टूडियो कॉम्पैक्ट

शांति के दूत

राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी ने विश्व शांति और मैत्री को बढ़ावा देने के लिए 1 मार्च 1961 को पीस कोर यानी शांति वाहिनी की स्थापना की थी। इसका मूल मकसद इच्छुक देशों में समाज सेवा के लिए व्यक्तियों तथा संस्थाओं को प्रशिक्षित लोग मुहैया कराना है और अमेरिका तथा संबद्ध मुल्कों के नागरिकों के रिश्तों को मजबूत बनाना है। अपनी स्थापना के बाद से संस्था से 138 देशों में 182,000 से ज्यादा स्वयंसेवकों को बुलाया जा चुका है। इन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार विकास, कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

ऊपर बाएं: पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के साथ एलू कर्सी मौदावला।
ऊपर: डॉ. माधवी पेठे और रोजालिन कार्टर के साथ कार्टर।

कल्याण केंद्र में क्या चल रहा है। बहुत से लोगों से घिरे कार्टर जब लोगों को यह सब बता रहे थे, तभी इस किताब के कवर पर जिस लड़की का फोटो छपा था, वह कार्टर से मिलने के लिए आ गई। तब की यह छोटी सी लड़की माधवी पेठे अब मुंबई के एम. एल. दहाणुकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स की प्रिंसिपल है। उन दिनों को याद करते हुए माधवी कहती हैं, ''मेरे पिताजी गोदरेज कंपनी में माली थे। यह फूलों और बच्चों के लिए लिलियन कार्टर का प्यार ही था जो हमारे परिवार को उनके करीब ले आया। एक बार जब वह मेरे पिताजी के काम की तारीफ कर रही थीं, मैं उनके करीब ही बैठी हुई थी। मेरे पिताजी ने तभी हमारी एक फोटो खींच ली। मुझे पता नहीं था कि एक दिन यही फोटो मुझे शोहरत दिलाएगी। ''

इस मिलन समारोह के दौरान डॉ. जी. डी. भाटिया ने पूर्व राष्ट्रपति को कुछ पुराने पारिवारिक फोटो एल्बम दिखाए और उन श्वेत-श्याम फोटो पर कार्टर ने अपने ऑटोग्राफ दिए। *स्पैन* से बातचीत में डॉ. भाटिया कहते हैं, ''जब मुझे पता चला कि शांति वाहिनी की दो स्वयंसेविकाएं फैक्टरी की डिस्पेंसरी में काम करना चाहती हैं तो मुझे एक पल के लिए भी इस बात का अंदाजा नहीं हुआ कि ये दोनों- लिलियन और मैबेल अपनी उम्र के सातवें दशक के नजदीक थीं। लेकिन यकीन मानिए, इन दोनों ने स्वयंसेवकों के बारे में मेरी धारणा को बदलकर रख दिया।'' वह बताते हैं कि महिला मरीज कैसे बहुत जल्दी श्रीमती कार्टर के साथ घुलमिल जाती थीं। वह अक्सर जरूरतमंद मरीजों को रुपये-पैसे से भी मदद कर दिया करती थीं। ''मैं जब कभी उनको ऐसा करने से मना करता था तो वह कहती थीं कि मेरे पास काफी पैसा है और मैं देना चाहती हूं।''

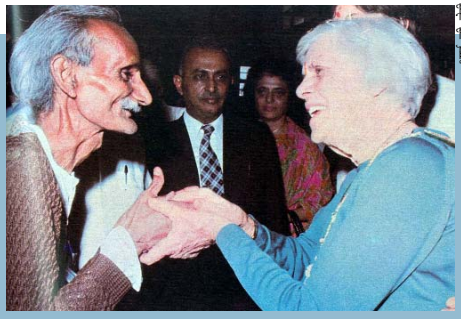

आई. जी. बेरी

लिलियन कार्टर 1977 की अपनी विखरोली की पुनर्यात्रा के दौरान पुराने परिचित हिंदी अध्यापक शीतलाप्रसाद यादव के साथ। यहां उन्होंने शांति कोर की स्वयंसेविका के रूप में काम किया था।

गौरव सिंह © ए. पी.-डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

बाएं: महाराष्ट्र के मलावली गांव में एक मकान के निर्माण में मदद करते जिमी कार्टर ।
दाएं: निर्माण स्थल पर मकान मालिक सुभाष साठे के साथ अभिनेता ब्रैड पिट। पिट ने साठे के घर के निर्माण के लिए क्षैतिज बीम रखने में मदद की।

कार्टर इस दौरान उन स्टाफ क्वार्टरों को भी देखने गए, जहां उनकी मां दूसरे कल्याण अधिकारियों के साथ रहा करती थीं। 78 साल की एलू कर्सी मौदावला श्रीमती कार्टर की पड़ोसन हुआ करती थीं। गुजरे दिनों को याद करते हुए वह कहती हैं कि लिलियन लोगों से मिलने के लिए उनके घरों में जाना काफी पसंद करती थीं और कामगारों की अशिक्षित पत्नियों को पढ़ाने में भी वह काफी रुचि लिया करती थीं। वह कामगारों के बच्चों को टीके लगाने के लिए अपने कार्यकर्ताओं के साथ आसपास के म्युनिसिपल स्कूलों में भी जाया करती थीं।

श्रीमती कार्टर को जानने वाले हर शख्स के पास पूर्व राष्ट्रपति कार्टर को सुनाने के लिए बहुत कुछ था। वरिष्ठ नर्स जी. एल. पीरुमल राजा ने कार्टर को बताया कि कैसे उन्होंने श्रीमती कार्टर के बाल काटे। तब विखरोली के इस इलाके में कोई ब्यूटी पार्लर नहीं हुआ करता था। जन स्वास्थ्य सुपरवाइजर सुधा अंबेकर ने बताया कि लिलियन लोगों की जिंदगी के तकरीबन हर पहलू में दिलचस्पी लिया करती थीं। इसमें फुल्का बनाने से लेकर स्वामी चिन्मयानंद के प्रवचन सुनना और परिवार नियोजन के बारे में गीत या पैरोडी वगैरह लिखना भी शामिल था। अंबेकर कहती हैं, 'उनमें गजब की ऊर्जा थी और इसके लिए आज भी लोग उनको दिल से याद किया करते हैं। वह आज भी हमारी यादों में बसती हैं।'